

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली-110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9958889970 पर Paytm कर दें। - अनिल आर्य



केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

वर्ष-38 अंक-4 श्रावण-2078 दयानन्दाब्द 198 16 जुलाई से 31 जुलाई 2021 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.07.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoo.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 249वां वेबिनार सम्पन्न

120वें जन्मोत्सव पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को किया नमन

एक देश में एक विधान, एक प्रधान और एक निशान के पक्षधर थे डॉ मुखर्जी –सांसद तरुण विजय
भारतीयता व राष्ट्रवाद के संदेशवाहक थे डॉ मुखर्जी –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

मंगलवार 6 जुलाई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 120वें जन्मोत्सव पर ऑनलाइन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में परिषद् का 245वां ऑनलाइन वेबिनार था। सांसद तरुण विजय ने कहा कि डॉ मुखर्जी अखण्ड भारत के स्वप्न द्रष्टा थे उन्होंने उस समय जम्मू कश्मीर की परमिट परिपाटी के विरुद्ध संघर्ष का सिंहनाद किया उन्होंने राष्ट्र को सन्देश दिया कि एक देश में दो प्रधान, दो विधान, दो निशान नहीं चलेंगे। वे जम्मू कश्मीर को भारत का अविभाज्य अंग बनाने के लिए बलिदान हो गए। उनके बलिदान को सच्ची श्रद्धांजलि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा धारा 370 व 35। समाप्त करके दी गयी। वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे कम आयु के उपकुलपति बने, उन्होंने पश्चिम बंगाल में हिंदुओं की रक्षा के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। उल्लेखनीय है कि डॉ मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई 1901 को कलकत्ता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता भी सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे। अपने पिता का अनुसरण करते हुए उन्होंने भी अल्पायु में ही विद्याध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलताएँ अर्जित कर ली व 33 वर्ष की अल्पायु में वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति बने। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि डॉ मुखर्जी ने राष्ट्र की एकता अखंडता के लिए अपना बलिदान दिया, उनके कार्य सदियों तक आने वाली पीढ़ियों का मार्गप्रशस्त करते रहेंगे। आज बंगाल में हिंदुओं की दयनीय स्थिति में वहाँ राष्ट्रपति शासन लगाने की आवश्यकता है। आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन से युवाओं को प्रेरणा लेने का आह्वान किया। समारोह अध्यक्ष हरीश भारद्वाज ने आभार व्यक्त करते हुए डॉ मुखर्जी की राष्ट्रवाद का प्रतीक बताया। प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों पर चलने की आवश्यकता है तभी हम राष्ट्रीय एकता अखंडता को मजबूत रख सकते हैं। आर्य नेता सुरेन्द्र शास्त्री के 77 वें जन्मोत्सव पर सभी ने शुभकामनाएं प्रदान की। गायिका प्रवीण आर्या, पुष्पा शास्त्री, नरेन्द्र आर्य 'सुमन', सुदेश आर्या, जनक अरोड़ा, कुसुम भंडारी, सुरेन्द्र तलवार, कृष्णा मुखी आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से राजेश मेहदीरत्ता, रमेश गाड़ी, राजीव चौधरी, देवेन्द्र गुप्ता, सौरभ गुप्ता, अथर्व अरोड़ा आदि उपस्थित थे।



“धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण” पर गोष्ठी सम्पन्न

हिन्दू अपने बैलेट की शक्ति को पहचाने –आर्य रविदेव गुप्ता
धर्म परिवर्तन से राष्ट्र के प्रति निष्ठा बदल जाती है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

गुरुवार 8 जुलाई 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में “धर्मान्तरण से राष्ट्रान्तरण” विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में परिषद् का 246 वां वेबिनार था। आर्य नेता रविदेव गुप्ता ने कहा कि एक व्यक्ति के धर्म परिवर्तन से एक विरोधी की संख्या बढ़ जाती है और उसकी सोच व विचारधारा बदल जाती है। वह अपने परिवार, पूर्वजों, इतिहास और राष्ट्रीयता से दूर हो जाता है। आज हिन्दू अपने बैलेट की शक्ति को पहचाने और संगठित मतदान करें। राष्ट्र की एकता अखंडता हिन्दू समाज के संगठन पर निर्भर करती है हिन्दू यदि कमजोर होगा तो राष्ट्र स्वत कमजोर होगा। हम जिसे धर्मान्तरण कहते हैं वह मतांतरण होता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि धर्म परिवर्तन से राष्ट्रीय सोच में परिवर्तन हो जाता है। उनकी निष्ठा अरब या रोम के प्रति हो जाती है। धर्म सार्वभौमिक होता है और राष्ट्रीयता एक देशीय है। आज आवश्यकता इस बात की है कि युवा पीढ़ी में राष्ट्रीयता की भावना भरे व आर्य हिन्दू जाति के इतिहास पर गर्व करना सिखाये। हिंदू संस्कृति प्राचीन व महान है सबके मंगल कल्याण की कामना करती है। धर्मान्तरण के विरुद्ध सख्त कानून बनाने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि अरुण आर्य व अध्यक्ष हर्षदेव शर्मा ने कहा कि युवाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता की कमी के कारण धर्म परिवर्तन की घटनाएं हो रही हैं अपने वैदिक सिद्धान्तों की सही जानकारी देने से घटनाएं रुकेगी। परिषद् के प्रांतीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि बेशक भारत के रहने वालों का डी एन ए एक हो लेकिन गौ पालक, रक्षक व गौ हत्यारे में अंतर होता है। गायिका प्रवीणा ठक्कर, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, बिंदु मदान, मर्दुल अग्रवाल, राजकुमार भंडारी, मधु खेड़ा, सुष्मा गुगलानी, रवीन्द्र गुप्ता, नरेन्द्र आर्य सुमन, वेदिका आर्या ने भजन प्रस्तुत किये। हापुड़ से आनन्द प्रकाश आर्य, महेन्द्र भाई, सौरभ गुप्ता, डॉ रचना चावला, राजेश मेहदीरत्ता, प्रेम सचदेवा, प्रकाश वीर शास्त्री, देवेन्द्र सचदेवा, देवेन्द्र गुप्ता, अमरनाथ बत्रा आदि उपस्थित थे।



भक्ष्य व अभक्ष्य भोजन तथा गौरक्षा पर ऋषि दयानन्द के विचार

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं, ज्ञानी व अज्ञानी। रोग के अनेक कारणों में से मुख्य कारण भोजन भी होता है। रोगी व्यक्ति डाक्टर के पास पहुंचता है तो कुशल चिकित्सक जहां रोगी को रोग निवारण करने वाली ओषधियों के सेवन के बारे में बताता है वहीं वह उसे पथ्य अर्थात् भक्ष्य व अभक्ष्य अर्थात् खाने व न खाने योग्य भोजन के बारे में भी बताता है जिससे रोगी का रोग दूर हो जाता है। महर्षि दयानन्द वेद एवं वैदिक साहित्य सहित वैद्यक व चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद के भी विद्वान थे। उन्होंने धर्मार्थ व वैद्यक शास्त्रोक्त दृष्टि से भक्ष्य व अभक्ष्य पदार्थों पर अपने विचार सत्यार्थप्रकाश में प्रस्तुत किये हैं। उनके विचार आज भी प्रासंगिक एवं अज्ञानियों के लिए मार्गदर्शक हैं। अतः उन्हें सबके लाभ हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं। वह लिखते हैं कि भक्ष्याभक्ष्य दो प्रकार का होता है। एक धर्मशास्त्रोक्त तथा दूसरा वैद्यकशास्त्रोक्त। जैसे धर्मशास्त्र में— 'अभक्ष्याणि द्विजातीनामध्याप्रभवाणि च॥ मनुस्मृति॥' इसका अर्थ है कि द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों को मलीन विष्टा मूत्रादि के संसर्ग से उत्पन्न हुए शाक फल मूल आदि न खाना। इसका तात्पर्य है कि शाक, फल व अन्न आदि पदार्थ शुद्ध व पवित्र भूमि में ही उत्पन्न होने चाहिये तभी वह भक्ष्य अर्थात् भोजन करने योग्य होते हैं। मलीन विष्टा मूत्रादि से दूषित भूमि में उत्पन्न खाद्य पदार्थ भक्ष्य श्रेणी में नहीं आते। महर्षि दयानन्द आगे लिखते हैं—'वर्जयेन्मधुमांसं च॥ मनु०॥' अर्थात् जैसे अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि। 'बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।' वचन को उद्धृत कर वह कहते हैं कि जो—जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं, उन का सेवन कभी न करें और जितने अन्न सड़े, बिगड़े दुर्गन्धादि से दूषित, अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्य, मांसाहारी म्लेच्छ कि जिन का शरीर मद्य, मांस के परमाणुओं ही से पूरित है, उनके हाथ का (पकाया व बना) न खावें।

वह आगे लिखते हैं कि जिस में उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बेल, गाय उत्पन्न होने से गाय की एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुंचता है वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दे। जैसे किसी गाय से बीस सेर और किसी से दो सेर दूध प्रतिदिन होवे उस का मध्यभाग ग्यारह सेर प्रत्येक गाय से दूध होता है। कोई गाय अठारह और कोई छः महीने दूध देती है, उस का भी मध्य भाग बारह महीने हुए। अब प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से 24960 (चैबीस सहस्र नौ सौ साठ) मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छः बछियां छः बछड़े होते हैं उन में से दो मर जाये तो भी दश रहें। उनमें से पांच बछड़ियों के जन्म भर के दूध को मिला कर 124800 (एक लाख चैबीस सहस्र आठ सौ) मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। अब रहे पांच बैल, वे जन्म भर में 5000 (पांच सहस्र) मन अन्न न्यून से न्यून उत्पन्न कर सकते हैं। उस अन्न में से प्रत्येक मनुष्य तीन पाव खावे तो अढ़ाई लाख मनुष्यों की तृप्ति होती है। दूध और अन्न मिला कर 374800 (तीन लाख चौहत्तर हजार आठ सौ) मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या मिला के एक गाय की एक पीढ़ी से 475600 (चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ) मनुष्य एक बार में पालित होते हैं और पीढ़ी परपीढ़ी बढ़ा कर लेखा करें तो असंख्यात मनुष्यों का पालन होता है। इस से भिन्न बैलगाड़ी सवारी भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकारक होते हैं तथा गाय दूध से अधिक उपकारक होती है परन्तु जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंस भी है परन्तु गाय के दूध घी से जितने बुद्धिवृद्धि से लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्योपकारक आर्यों ने गाय को गिना है और जो कोई अन्य विद्वान होगा वह भी इसी प्रकार समझेगा।

बकरी के दूध से 25920 (पच्चीस सहस्र नौ सौ बीस) आदमियों का पालन होता है वैसे हाथी, घोड़े, ऊंट, भेड़, गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा।

देखो ! जब आर्यों (वेद के मानने वाले श्रेष्ठ मनुष्यों) का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्योवर्त वा अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे। क्योंकि दूध, घी, बेल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न व रस पुष्कल प्राप्त होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। क्योंकि "नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।" जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फल फूल कहां से हों?

महर्षि दयानन्द एक काल्पनिक प्रश्न यथा जो सभी अहिंसक हो जायें तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जायें कि सब गाय आदि पशुओं को मार खायें तुम्हारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ जाय? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि यह राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हों उन्हें दण्ड देवें और प्राण भी वियुक्त कर दें। (प्रश्न) फिर क्या उन का मांस फेंक दें? (उत्तर) चाहें फेंक दें, चाहें कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मांस खाने वाले मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।

जितना हिंसा, चोरी, विश्वासघात, छल व कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है, वह अभक्ष्य और अहिंसा व धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। जिन पदार्थों से स्वास्थ्य रोगनाश बुद्धि—बल—पराक्रम—वृद्धि और आयु—वृद्धि होवे उन तण्डुलादि, गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध, घी, मिष्टादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाक मेल करके यथोचित समय पर मिताहार भोजन करना सब भक्ष्य कहाता है। जितने पदार्थ अपनी प्रकृति से विरुद्ध विकार करने वाले हैं, जिस—जिस

के लिए जो—जो पदार्थ वैद्यकशास्त्र वा वैदिक चिकित्सा शास्त्र में वर्जित किये हैं, उन—उन का सर्वथा त्याग करना और जो—जो जिस के लिए विहित है उन—उन पदार्थों का ग्रहण करना, यह भी भक्ष्य है।

गोकरुणानिधि पुस्तक में पशु हिंसक मनुष्य का काल्पनिक पक्ष प्रस्तुत कर महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि देखो ! जो शाकाहारी पशु और मनुष्य हैं वे बलवान् और जो मांस नहीं खाते वह निर्बल होते हैं, इसलिए मांस खाना चाहिये। इसका प्रतिवाद करते हुए महर्षि दयानन्द पशु रक्षक की ओर से कहते हैं कि क्यों ऐसी अल्प समझ की बातें मानकर कुछ भी विचार नहीं करते। देखो, सिंह मांस खाता और सुअर वा अरणा भैंसा मांस कभी नहीं खाता, परन्तु जो सिंह बहुत मनुष्यों के समुदाय में गिरे तो एक वा दो को मारता और एक दो गोली या तलवार के प्रहार से मर भी जाता है और जब जंगली सुअर वा अरणा भैंसा जिस प्राणि समुदाय में गिरता है, तब उन अनेक सवारों और मनुष्यों को मारता और अनेक गोली, बरछी तथा तलवार आदि के प्रहार से भी शीघ्र नहीं गिरता, और सिंह उस से डर के अलग सटक जाता है और वह अरणा भैंसा सिंह से नहीं डरता।

जिस देश में सिवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मिलता, वहां आपत्काल अथवा रोगनिवृत्ति के लिये क्या मांस खाने में दोष होता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि यह कहना व्यर्थ है क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं, वहां पृथिवी अवश्य होती है। जहां पृथिवी है वहां खेती वा फल—फूल आदि होते हैं और जहां कुछ भी नहीं होता, वहां मनुष्य भी नहीं रह सकते। और जहां ऊसर भूमि है, वहां मिष्ट जल और फल—आहार आदि के न होने से मनुष्यों का रहना भी दुर्घट है। आपत्काल में भी मनुष्य अन्य उपायों से अपना निर्वाह कर सकते हैं जैसे मांस के न खाने वाले करते हैं। बिना मांस के रोगों का निवारण भी ओषधियों से यथावत् होता है, इसलिये मांस खाना अच्छा नहीं।

महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति के आधार पर लिखा है कि जो मनुष्य वेदोक्त धर्म और जो वेद से अविरोद्ध मनुस्मृति युक्त धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मर कर सर्वोत्तम सुख को प्राप्त होता है। यहां बताया गया है कि वेद और वेदानुकूल मनुस्मृति के वचनों का पालन करने पर इस लोक में उन्नति होती है और मर कर भी जीवात्मा को सर्वोत्तम सुखों की प्राप्त होती है। हमारे मांसाहारी भाई कभी यह जानने का प्रयास ही नहीं करते कि मरने के बाद आत्मा का अस्तित्व रहता है वा नहीं? यदि रहता है तो उसको सुख व दुःख क्यों, कैसे व किस प्रकार से प्राप्त होते हैं व उनका आधार क्या होता है। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं कि जो विद्या नहीं पढ़ा है वह जैसा काष्ठ का हाथी, चमड़े का मृग होता है वैसे अविद्वान मनुष्य जगत् में नाममात्र मनुष्य कहलाता है। इसलिए वेदादि विद्या को पढ़, विद्वान्, धर्मात्मा होकर निर्वैरता से सब प्राणियों के कल्याण का उपदेश करें और उपदेश में वाणी को मधुर और कोमल बोलें। जो सत्योपदेश से धर्म की वृद्धि और अधर्म का नाश करते हैं, वे पुरुष धन्य हैं।

महर्षि दयानन्द गोकरुणानिधि पुस्तक में उपदेश करते हुए कहते हैं कि ध्यान देकर सुनिये कि जैसा दुःख—सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों को भी समझा कीजिये। और यह भी ध्यान में रखिये कि वे पशु आदि और उन के स्वामी तथा खेती आदि कर्म करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट होता जाता है, इसीलिये राजा प्रजा से कर लेता है कि उन की रक्षा यथावत् करे न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश किया जावे। इसलिये आज तक जो हुआ सो हुआ आगे आंखे खोल कर सब के हानिकारक कर्मों को न कीजिये और न करने दीजिये। हां हम लोगों का यही काम है कि आप लोगों को भलाई और बुराई के कामों को जता देवें, और आप लोगों का यही काम है कि पक्षपात छोड़ सब की रक्षा और उन्नति करने में तत्पर रहें। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हम और आप पर पूर्ण कृपा करें कि जिस से हम और आप लोग विश्व के हानिकारक कर्मों को छोड़, सर्वोपकारक कर्मों को कर के सब लोग आनन्द में रहें। इन सब बातों को सुन मत डालना, किन्तु सुन कर उसके अनुसार आचरण करना। इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना। हे महाराजधिराज जगदीश्वर ! जो इन (गाय आदि पशुओं) को कोई न बचावे तो आप इन की रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हुजिये।

लेख को विराम देने से पूर्व हम यह भी उल्लेख करना चाहते हैं कि वेद और महर्षि दयानन्द संसार के सभी मनुष्यों को एक ही ईश्वर की सन्तान के रूप में मानते हैं। वेद में किसी मत विशेष के मनुष्य के प्रति कोई पूर्वाग्रह व पक्षपात करने का विधान नहीं है जैसा कि अन्य मतों में देखा जाता है कि सब अपने अपने समुदाय के प्रति ही उन्नति आदि के इच्छुक होते हैं। इसी कारण महर्षि दयानन्द ने न केवल भारतीय आर्य—हिन्दू—बौद्ध—जैन आदि के हित व लाभ के लिए ही वैदिक धर्म का प्रचार किया अपितु संसार के अन्य मतों के अनुयायियों के प्रति भी अपनी शुभेच्छा का परिचय दिया। वह संसार के सभी लोगों का एक वैदिक सत्य धर्म, एक संस्कृति, एक मत, एक भाषा, एक सुख—दुख, समानता व निष्पक्षता के पक्षधर थे। उनकी यह विशिष्टता वैदिक विचारधारा के कारण से थी। इसी विचारधारा को अपनाकर ही संसार में सभी विवादों का हल, शान्ति व सुख का वातावरण तैयार हो सकता है। ओ३म् शम्।

“खुद से प्यार कैसे करें” पर गोष्ठी सम्पन्न

अपने अंदर खुशी का सागर ढूँढे –टीना कपूर

सोमवार 12 जुलाई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में “खुद से प्यार कैसे करें” विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। कॅरोना काल में परिषद का 248 वा वेबिनार था। माइंड फुलनेस कोच टीना कपूर ने बहुत ही प्रेम और सरलता से योग और प्राणायाम के माध्यम से दर्शकों को समझाया। सभी दर्शकों ने उनके बताए हुए एक्ससाइज़ और योग की क्रियाओं को बहुत अच्छे से समझा और अपनी जिंदगी में अपनाने का वायदा भी किया। कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण भाग टीना जी द्वारा कराई गई मेडिटेशन थी जिसमें उन्होंने स्वयं को और अपने व्यक्तित्व के हर पहलू को किस तरह से स्वीकारना चाहिए, यह प्रेरणा दर्शकों को दी। उन्होंने ‘नाड़ी शोधन’ प्रणायाम की सही विधि बहुत ही दिलचस्प तरीके से समझाई। टीना जी ने अच्छा दिखने के लिए कुछ ‘फेस योग’ की लाभदायक क्रियाएं भी दर्शकों को करवाई। ‘सेल्फ लव’ मेडिटेशन में उन्होंने जैसे दर्शकों को एक नई दुनिया से अवगत कराया। वह दुनिया जो हमारे अपने अंदर खुशी का सागर लिए बैठी होती है परंतु हम उस खुशी को बाहर ढूँढते रहते हैं और सारी आयु उसी प्रयास में व्यर्थ कर देते हैं। उन्होंने अपने सेल्फ लव मेडिटेशन के द्वारा अंदरूनी खुशी का सही मतलब समझाया। वह खुशी जो हम एक स्वस्थ मस्तिष्क, शरीर और आत्मा को प्यार करके, तथा उनका निरंतर ध्यान रख कर हासिल कर सकते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि खुशी व्यक्ति के अंदर निहित होती है पर बाहर ही ढूँढता रहता है। मुख्य अतिथि डॉ. तेजिन्द्र सिंह ने कहा कि शांति व आनंद लेने के अलग अलग तरीके हैं। ध्यान द्वारा, भजन द्वारा, डांस द्वारा, अच्छी पुस्तकों के स्वाध्याय आदि द्वारा हम अपना जीवन बेहतर बना सकते हैं। अध्यक्ष अनिता रेलन ने जोर देकर कहा कि व्यक्ति सारी आयु बाहरी दुनिया में खुशी के लिए भटकता रहता है, सच्ची खुशी अपने परिवार में है जो कॅरोना ने बता दिया है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने योग को ही खुशी का साधन बताया। गायिका प्रवीना ठक्कर, मर्दुल अग्रवाल, डॉ. कल्पना रस्तोगी, शशि चोपड़ा, आशा आर्या, डॉ. सुनील रहेजा, सुमित्रा गुप्ता, जनक अरोड़ा, प्रतिभा सपरा, आदि ने भजन सुनाये। प्रमुख रूप से आनन्द प्रकाश आर्य, सौरभ गुप्ता, सुदेश डोगरा, राजेश मेहंदीरता, ओम सपरा, सुदेशवीर आर्य, रवीन्द्र गुप्ता आदि उपस्थित थे।



“कैसे करें भोर में स्नान” पर गोष्ठी सम्पन्न

प्रातः काल वेद मंत्रों का पाठ आनंदित करता है –दर्शनाचार्य विमलेश बंसल

रविवार 4 जुलाई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में “कैसे करें भोर में स्नान” विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 244 वे वेबिनार था। वैदिक विदुषी दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने कहा कि व्यक्ति को प्रातः उठकर प्रातः कालीन मंत्रों का पाठ करना चाहिए। मन शांत, चित शांत और जग शांत भोर का समय प्रभु स्तुति व प्रभु मिलन का सुन्दर समय है। उन्होंने अपने ओजस्वी, ज्ञानवर्धक, प्रेरक, भक्तिभाव से परिपूर्ण ज्ञानगंगा में स्नान कराते हुए कहा—कि जगतजननी माँ हमें अपने सहस्र हाथों से प्रतिक्षण स्नान करा रही है अपने गुण कर्म स्वभाव द्वारा ज्ञान ऐश्वर्य के लोटे भर भर। इस बात का अनुभव अर्थात् उस परमात्मा के गुण कर्म स्वभाव की अनुभूति हमें भोर के एकांत में अवश्य उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना द्वारा प्रातःकालीन जागरण मंत्रों से अत्यंत श्रद्धा, भक्ति, प्रीति, समर्पण के साथ अवश्य करनी चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि ईश्वर स्तुति से मन को शक्ति व ईश्वर के गुण प्राप्त होते हैं, व्यक्ति आशावादी बनता है बड़े से बड़ा कष्ट आसानी से सहन कर लेता है। मुख्य अतिथि उर्मिला आर्या व अध्यक्ष डॉ. रचना चावला ने दैनिक संध्या व उपासना पर बल दिया। परिषद के राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने योग से ईश्वर प्राप्ति का राह बताई। गायिका प्रवीना ठक्कर, दीप्ति सपरा, संतोष शर्मा, ईश्वर देवी, कुसुम भण्डारी, नरेंद्र आर्य सुमन, निर्मल विरमानी, उर्मिला आर्या, रवीन्द्र गुप्ता आदि ने भजन सुनाये। प्रमुख रूप से करुणा चांदना, आनन्द प्रकाश आर्य, महेंद्र भाई, सौरभ गुप्ता, शोभा सेतिया, इंदु मेहता, प्रतिभा कटारिया, जनक अरोड़ा, वेद भगत आदि उपस्थित थे।



“भोजन और भ्रांतियां” पर गोष्ठी सम्पन्न

उचित आहार विहार से रहोगे फिट –प्रो. करुणा चांदना

बुधवार 14 जुलाई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में “भोजन और भ्रांतियां” विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कॅरोना काल में 249 वा वेबिनार था। मुख्य वक्ता प्रो. करुणा चांदना ने न्यूट्रीशन के बारे में बताते हुए कहा कि आज हर व्यक्ति फिजिकली फिट रहना चाहता है इसके लिए रहन-सहन खानपान दिनचर्या क्या है? यह बहुत जरूरी है। लोगों को आज भ्रांति है कि ड्राई फ्रूट के लेने से कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है परंतु ऐसा नहीं है इससे प्रोटीन कैल्शियम ओमेगा 3 फैटी एसिड मिलता है जोकि हड्डियों और दिमाग के लिए बहुत जरूरी है। उन्होंने नॉनवेज, अंडे, तली, भुनी चीजें, मैदा की चीजें जो है खाने से मना किया। हालांकि मिल्क कंप्लीट फूड है फिर भी चार-पांच महीने के बाद बच्चों को सप्लीमेंट्री देनी चाहिए क्योंकि उन्हीं से इनको आयरन और विटामिन सी मिलता है यह भी ध्यान रखना है कि हर वस्तु बैलेंस करके लेनी है बहुत हद तक रात्रि को मिल्क लेना ठीक है इससे नींद अच्छी आती है उन्होंने दही के फायदे भी बताएं कैसे लेनी है कब लेनी है पर चर्चा हुई और एक व्यक्ति को 1 दिन में कितना पानी लेना है यह भी बताया उन्होंने रात को चावल जनरली खाने से मना किया और यदि लेने भी पड़े तो बॉयल्ड ले और उन्होंने कहा कि ब्रेकफास्ट हेल्दी और एनर्जिक लेना चाहिए यही एनर्जी पूरे दिन काम आती है भूखे रहने से वजन कम नहीं होता बल्कि उसके लिए सलाद, फ्रूट लें जिससे भूख कम लगेगी बैलेंस डाइट लें कार्बोहाइड्रेट कम नहीं करना है यह उपयोगी होता है शरीर रूपी बिल्डिंग का फंक्शन है इसमें। फ्रूट्स में तरबूज और खरबूजा इकट्टे ले सकते हैं उसके साथ अन्य फल नहीं लेने फ्रूट के साथ मीठे फल भी लेने से इनकार किया। केले के साथ अमरुद नहीं लेना। सब्जी के साथ फल नहीं लेना, अगर लेना ही हो तो अलग-अलग समय में लें क्योंकि फलों की पाचन शक्ति तीव्र होती है। संतरे गाजर को मिलाकर नहीं लेना आदि विषय पर विस्तृत चर्चा की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि उचित व पौष्टिक आहार स्वस्थ शरीर की नींव है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि परस्पर विरोधी फलाहार व भोजन से बचना चाहिए। मुख्य अतिथि मधु बेदी व अध्यक्ष दुर्गेश आर्य ने जोर देकर कहा कि भूख से कम खाना चाहिए और पाचक भोजन करना चाहिए। गायिका प्रवीना ठक्कर, रवीन्द्र गुप्ता, ईश्वर देवी, बिन्दु मदान, 90 वर्षीय सुमित्रा गुप्ता, कुसुम भण्डारी, नरेंद्र आर्य सुमन, संध्या पांडेय, सुदेश आर्या ने मधुर भजन प्रस्तुत किये। प्रमुख रूप से अनिता रेलन, डॉ. तेजिन्द्र सिंह, डॉ. रचना चावला, डॉ. सुनील रहेजा, सौरभ गुप्ता, नारायण दास आर्य, अमरनाथ बत्रा, राजेश मेहंदीरता आदि उपस्थित थे।



“कर्म योग” पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

ज्ञान पूर्वक किए गए कर्म ही भक्ति हैं –नरेन्द्र आहूजा विवेक
कर्मशील मनुष्य ही सफलता पाते हैं –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 2 जुलाई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में “कर्मयोग” विषय पर वेबिनार आयोजित किया गया। यह कोरोना काल में 243 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता हरियाणा के राज्य औषधि नियन्त्रक एवं केन्द्रीय आर्य युवक के हरियाणा के प्रभारी नरेन्द्र आहूजा विवेक ने कर्म योग विषय पर बोलते हुए कहा कि संसार का उपकार करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है और हमें सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। योगेश्वर कृष्ण ने महाभारत युद्ध से पूर्व विषाद में फसे अर्जुन को गीता ज्ञान देते हुए कर्म योग का ज्ञान दिया था। कर्तव्य कर्म का निर्वहन ही हमारा धर्म है। अपने द्वारा किये गए कर्मों में हम स्वतंत्र हैं पर फल हमें ईश्वर की न्याय व्यवस्था में प्राप्त होते हैं। जो कर्म नहीं करता वह अकर्मा दस्यु कहलाता है। ईश्वर प्रदत्त साधन मनुष्य तन का उपयोग हमें अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। पतंजलि योग दर्शन में योग के आठ अंग हैं यम नियम आसन प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि हमें इनका पालन करना चाहिए। केवल आसन प्राणायाम पूर्ण योग नहीं है। योग: कर्मसु कोशलम हम योग द्वारा ही अपने कर्मों में कुशलता प्राप्त कर सकते हैं। हमें जीवन में कर्म योग के नियमों का पालन करते हुए निष्काम भाव से परोपकार के सर्वश्रेष्ठ कार्य करने चाहिए। हमें अपनी उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कोरोना के विरुद्ध युद्ध को महाभारत युद्ध बताया और कहा कि हमें इस युद्ध में कोरोना योद्धाओं के साथ खड़े होकर लड़ना होगा और विजय प्राप्त करनी होगी। व्यक्ति को कर्म करना चाहिए कर्मशील मनुष्य ही जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। मुख्य अतिथि डॉ. गजराज आर्य (प्रधान, आर्य केंद्रीय सभा फरीदाबाद) ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कर्म योग के ज्ञान को उपयोगी बताया। कार्यक्रम अध्यक्ष राजीव आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। गायिका प्रवीणा ठक्कर, बिंदु मदान, रवीन्द्र गुप्ता, सुषमा गुगलानी, संगीता आर्या, उर्मिला आर्या, दीप्ति सपरा, जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, आशा आर्या, अंजू आहूजा, कृष्णा भाटिया आदि ने भजन प्रस्तुत किये। हापुड़ से आनन्द प्रकाश आर्य, प्रवीण आर्य (प्रान्तीय महामंत्री, उत्तर प्रदेश), सौरभ गुप्ता, महेंद्र भाई, देवेन्द्र गुप्ता, कमलेश हसीजा आदि उपस्थित थे।



गजल से बान्धा समां

गजल दिल दिमाग को सकून देती है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार 10 जुलाई 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में “गजल” का ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कोरोना काल में 247 वां वेबिनार था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि कोरोना काल में लोग घरों में बंद हैं अकेलापन, उदासीनता का वातावरण है ऐसे समय में गजल मन को शांति प्रदान करती है। जगजीत सिंह जी, पंकज उदास, अनूप जलोटा आदि ने लोगों को जीने का रास्ता बताया है। नरेन्द्र आर्य सुमन, प्रवीण आर्या, नताशा कुमार, दीप्ति सपरा, सुदेश आर्या, किरण सहगल, नरेश खन्ना, रवीन्द्र गुप्ता, वीणा वोहरा आदि ने रंजिश ही सही, ओठो से छुलो तुम, तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो, दिल के अरमान आंसुओ, तुम तसल्ली न दो सिर्फ बैठे रहो आदि से वातावरण आकर्षक बना दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंजू मेहरोत्रा (कालका ग्रुप ऑफ एजुकेशन) ने की। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने गायक कलाकारों को धन्यवाद ज्ञापित किया और एक गजल प्रस्तुत की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भिन्न भिन्न विषयों पर 247 वेबिनार कर चुका है।



मनुस्मृति में किये गये प्रक्षेपों से होने वाली हानियां

आर्यजगत् की प्रसिद्ध वैदिक साहित्य के शोध एवं प्रकाशन की संस्था ‘आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली’ द्वारा इतिहास में प्रथमवार दिनांक 26 दिसम्बर, 1981 को प्रक्षेपों से रहित “विशुद्ध-मनुस्मृति” का भव्य प्रकाशन किया गया था। इस अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ के व्याख्याता, समीक्षक तथा सम्पादक आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान कीर्तिशेष पं. राजवीर शास्त्री जी थे। इस ग्रन्थ में महर्षि दयानंद जी के मनुस्मृति के श्लोकों के उपलब्ध अर्थों व व्याख्याओं को प्रस्तुत करने सहित मनुस्मृति के सभी शुद्ध श्लोकों का हिन्दी भाष्य भी दिया गया था। इसके साथ ही इस ग्रन्थ में मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोकों को न देकर प्रक्षिप्त श्लोकों की समीक्षा भी प्रस्तुत की गई थी। ग्रन्थ के आरम्भ में ट्रस्ट के प्रधान कीर्तिशेष अनन्य ऋषिभक्त महात्मा दीपचन्द्र आर्य जी का 4 पृष्ठों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाशकीय भी दिया गया है। इस प्रकाशकीय के बाद ग्रन्थ के व्याख्याता एवं सम्पादक पं. राजवीर शास्त्री जी का 24 पृष्ठों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राक्कथन दिया गया है। इस प्राक्कथन में मनुस्मृति का महत्व, प्रक्षेप के कारण, प्रक्षेपों से हानि, मनुस्मृति से प्रक्षेपों को निकालने के आधार आदि सहित मनुस्मृति के प्रस्तुत किये गये संस्करण की विशेषतायें भी विस्तार से सूचित की गई हैं। इस प्रथम संस्करण के बाद इसका पुनः प्रकाशन नहीं हुआ है। वर्तमान में सम्भवतः नेट पर इस ग्रन्थ को पढ़ा जा सकता है। हम प्रस्तुत लेख में पं. राजवीर शास्त्री जी द्वारा विशुद्ध-मनुस्मृति में सम्मिलित “प्रक्षेपों से हानि” शीर्षक से दिये महत्वपूर्ण विचारों को उद्धृत कर रहे हैं जिससे पाठकों को इसका ज्ञान हो सके। हम आशा करते हैं कि इससे पाठक लाभान्वित होंगे। इस विषयक पं. राजवीर शास्त्री जी लेख उद्धृत है:-

“(1) वेदों के मिथ्या-भाष्यों के कारण वेदों के प्रति अनास्था, घृणाभाव और वेदों को गडरियों के गीत कहा जाने लगा, वैसे ही मनुस्मृति जैसे उत्कृष्ट तथा प्रामाणिक ग्रन्थ के प्रति भी हीनभावना उत्पन्न होने लगी। क्योंकि मनुस्मृति का संविधान तो सार्वभौम, जाति, देश तथा काल के बन्धनों से रहित, अत्यन्त शुद्ध, पक्षपात रहित, तथा वेदानुकूल है और प्रक्षेपों में वेदविरुद्ध, पक्षपातपूर्ण, अतिशयोक्तिपूर्ण, परस्परविरुद्ध, प्रसंगविरुद्धादि अनेक प्रकार के मलीनता के भाव ओत-प्रोत हैं। जिनके कारण न केवल इस ग्रन्थ की आलोचना अथवा दोषारोपण ही हुए, प्रत्युत एक वर्गविशेष ने तो इसकी प्रतियों को अग्नि में स्वाहा करने का भी साहस कर दिया। और मनु की उदार, जनहितैषी, सत्य मान्यताओं को प्रक्षेपकों ने इतना सकीर्ण, तथा कुण्ठित बना दिया था कि जिनके कारण न केवल इस ग्रन्थ के प्रति हेय-भावना ही उत्पन्न हुई, प्रत्युत इसे एक वर्गविशेष का ही माना जाने लगा।

(2) मनु के अनुसार वर्णों की व्यवस्था का आधार गुण, कर्म तथा स्वभाव हैं, परन्तु जन्मजात ब्राह्मणों की दूषित परम्परा के प्रचलित होने पर मनु के श्लोकों को भी जन्म-परक ही माना जाने लगा जिसके कारण जन्म-जात ब्राह्मणों की श्रेष्ठता तथा दूसरे वर्ण के लोगों के प्रति घृणाभाव फैला। धर्मानुष्ठान से लोगों को वंचित रखा गया, विद्या पढ़ने व यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार कुछ परिगणित व्यक्तियों के ही अधीन रह गया, मनु के अहिंसामूलक परमधर्म को भुलाकर सर्वोत्तम यज्ञ जैसे पवित्र कार्यों में भी हिंसा का आश्रय किया जाने लगा, सात्विक आहार के प्रशंसक मनु को राक्षस एवं तामसिक मांस-मदिरा का पोषक बना दिया, और भारतीय-संस्कृति के मूल आधाररूप जन-हितैषी सत्य-मान्यताओं को अज्ञान, मिथ्याज्ञान तथा भ्रान्तियों के अन्धकार से बिल्कुल ही ढक दिया गया। स्त्रियों के प्रति अत्यन्त सम्मान की भावना रखने वाले मनु को स्त्री-विरोधी बना दिया। ‘स्वयंवर-विवाह’ विवाह का उत्तम समय युवावस्था, एक-पत्नीव्रत, तथा आध्यात्मिक-भावों से ओत-प्रोत इस धर्म-शास्त्र का धर्मविरुद्ध दुःखमूलक बाल-विवाह, बहु-विवाहादि कुप्रथाओं के चंगुल में डाल दिया। और परवर्ती समयों के देश तथा नामों के मिश्रण से इस ग्रन्थ (मनुस्मृति) को बहुत ही नवीनतम सिद्ध कर दिया है।

(3) मनु की जो मौलिक मान्यतायें इस ग्रन्थ में हैं, वे बहुत ही शिक्षाप्रद, हृद्य, सत्य एवं निर्भ्रांत हैं। मनुप्रोक्त धर्म का विधान हिंसा-रहित पक्षपात रहित व सार्वभौम है जिनके कारण आज भी इस ग्रन्थ का सम्मान अत्यधिक है और प्रक्षिप्त श्लोकों के अभाव के समय में तो इसकी प्रामाणिकता तथा साहित्यिक मूल्यांकन सर्वोच्च था, परन्तु आज इस ग्रन्थ में स्वार्थ व पक्षपातमूलक दूषित प्रवृत्ति देखकर इसके प्रति घृणाभाव के बीज अंकुरित हो गये हैं। और मनु का व्यक्तित्व तथा प्रामाणिकता अस्त-व्यस्त ही दिखायी देने लगी है जिसके कारण मानव समाज में एक धर्मनिर्णय का मापदण्ड न होने से सूर्य के अभाव में घोर अन्धेरे वाली रात्रि जैसी दशा हो गई है। लोगों के मनो में सत्यधर्म की आस्था न होने से निशाचर राक्षसीवृत्ति वाले उलूकरूप मत-मतान्तरों के पक्षधर अपना-अपना स्वार्थ-साधन करने में लगे हैं और सुखमूलक धर्म के अनुष्ठान न करने से और दुःखमूलक अधर्म के छा जाने से सर्वत्र दुःख, अशान्ति, व्याकुलता के कारण त्राहि-त्राहि की करुण-क्रन्दन की श्रृगाल तुल्य ध्वनियां सुनायी दे रही हैं। और त्रिविध दुःखें से सन्तप्त तथा पथ-भ्रष्ट मानव निराशा-नदी में ही निमग्न दिखायी दे रहा है।”

हम आशा करते हैं कि हमारे प्रिय पाठक पं. राजवीर शास्त्री जी के उपर्युक्त विचारों से लाभान्वित होंगे। कुछ समय बाद हम पंडित जी द्वारा लिखित मनुस्मृति के महत्व को भी प्रस्तुत करेंगे। ओ३म् शम्।

—मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 09412985121